कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 02 भाग 12 मार्च, 2026

# प्राकृतिक खेती: सतत एवं टिकाऊ कृषि की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल

**दुर्गेश कुमार मौर्य [1*], राजेश चन्द्र वर्मा [2], तरुण कुमार [3] और सुबेदार सिंह [4]**

[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान), कृषि विज्ञान केंद्र, संतकबीर नगर

[2]वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष (पादप रोग विज्ञान), कृषि विज्ञान केंद्र, संतकबीर नगर

[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि वानिकी), कृषि विज्ञान केंद्र, संतकबीर नगर

[4]सहायक प्राध्यापक, मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन, कृषि विभाग, मंदसौर विश्वविद्यालय, मंदसौर, मध्य प्रदेश - 458001

***E-mail: durgeshmaurya3174@gmail.com**

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है और देश की बड़ी आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। हरित क्रांति के बाद देश में खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, लेकिन इसके साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग भी बढ़ गया। इसके परिणामस्वरूप मिट्टी की उर्वरता में गिरावट, जल स्रोतों का प्रदूषण, पर्यावरण असंतुलन और मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। वर्तमान समय में किसानों की बढ़ती लागत और घटती आय भी एक बड़ी समस्या है। ऐसे परिदृश्य में प्राकृतिक खेती एक स्थायी और कम लागत वाली कृषि प्रणाली के रूप में उभरकर सामने आई है।

## प्राकृतिक खेती का अर्थ एवं अवधारणा

प्राकृतिक खेती एक ऐसी कृषि पद्धति है जिसमें खेती के सभी कार्य प्राकृतिक संसाधनों और प्रक्रियाओं के माध्यम से किए जाते हैं। इसमें किसी भी प्रकार के रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक या हानिकारक पदार्थों का प्रयोग नहीं किया जाता।

## प्राकृतिक खेती के प्रमुख घटक

प्राकृतिक खेती एक समग्र कृषि प्रणाली है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों और जैविक प्रक्रियाओं का उपयोग करके मिट्टी की उर्वरता तथा फसल उत्पादन को बनाए रखा जाता है। इसके अंतर्गत कुछ प्रमुख घटक शामिल होते हैं, जो मिलकर एक संतुलित कृषि पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं। ये घटक न केवल पौधों को पोषण प्रदान करते हैं, बल्कि मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की सक्रियता को भी बढ़ाते हैं, जिससे दीर्घकालिक उत्पादकता सुनिश्चित होती है।

**1. जीवामृत:** जीवामृत प्राकृतिक खेती का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तरल जैविक घोल है, जिसे देसी गाय के गोबर, गोमूत्र, गुड़, बेसन तथा स्थानीय मिट्टी को मिलाकर तैयार किया जाता है। यह घोल मिट्टी में लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या को तेजी से बढ़ाता है और पोषक तत्वों को घुलनशील रूप में परिवर्तित करता है, जिससे पौधों द्वारा उनका अवशोषण आसानी से हो पाता है। जीवामृत के नियमित उपयोग से मिट्टी की संरचना में सुधार होता है, पौधों की वृद्धि तेज होती है तथा उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी वृद्धि होती है। यह रासायनिक उर्वरकों का प्रभावी विकल्प माना जाता है और खेती की लागत को कम करने में सहायक होता है।

**2. घन जीवामृत:** घन जीवामृत, जीवामृत का ठोस रूप है, जिसे सूखे पदार्थ के रूप में तैयार किया जाता है। यह खेत में डालने पर धीरे-धीरे विघटित होकर पोषक तत्वों की निरंतर आपूर्ति करता है। यह विशेष रूप से उन क्षेत्रों में उपयोगी होता है, जहा तरल जीवामृत का उपयोग करना कठिन होता है। घन जीवामृत मिट्टी की जल धारण क्षमता को बढ़ाता है और उसमें जैविक पदार्थों की मात्रा में वृद्धि करता है। इसके उपयोग से मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की सक्रियता बनी रहती है, जिससे फसल की वृद्धि स्थिर और संतुलित होती है।

**3. बीजामृत:** बीजामृत का उपयोग बीज उपचार के लिए किया जाता है और यह प्राकृतिक खेती का एक महत्वपूर्ण प्रारंभिक चरण है। इसे गोबर, गोमूत्र, चूना और मिट्टी के मिश्रण से तैयार किया जाता है। बीजामृत बीजों को विभिन्न रोगजनक फफूंद एवं बैक्टीरिया से सुरक्षा प्रदान करता है और अंकुरण की दर को बढ़ाता है। इसके प्रयोग से पौधों की प्रारंभिक वृद्धि स्वस्थ होती है, जिससे आगे चलकर फसल की उत्पादकता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह रासायनिक बीज उपचार का एक सुरक्षित और प्रभावी विकल्प है।

**4. आच्छादन:** आच्छादन का अर्थ है मिट्टी की सतह को फसल अवशेष, सूखी पत्तियों या अन्य जैविक पदार्थों से ढकना। यह तकनीक मिट्टी की नमी को संरक्षित रखने में अत्यंत सहायक होती है, जिससे सिंचाई की आवश्यकता कम हो जाती है। आच्छादन खरपतवारों की वृद्धि को भी नियंत्रित करता है और मिट्टी के तापमान को संतुलित बनाए रखता है। इसके अलावा, जैविक आच्छादन धीरे की पदार्थों कार्बनिक में मिट्टी होकर विघटित धीरे-है बढ़ाता को मात्रा, जिससे मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है।

**5. वाफसा:** वाफसा प्राकृतिक खेती की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जिसका तात्पर्य मिट्टी में हवा और नमी के उचित संतुलन से है। इस स्थिति में मिट्टी न तो अत्यधिक गीली होती है और न ही पूरी तरह सूखी, जिससे पौधों की जड़ों को पर्याप्त ऑक्सीजन मिलती है। वाफसा की स्थिति बनाए रखने से पौधों द्वारा पोषक तत्वों का अवशोषण अधिक प्रभावी होता है और पानी की बचत भी होती है। यह अवधारणा अत्यधिक सिंचाई से बचने और संतुलित जल प्रबंधन को बढ़ावा देती है।

## प्राकृतिक खेती के सिद्धांत

प्राकृतिक खेती कुछ मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित होती है, जिनका उद्देश्य कृषि को पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ बनाना है। इसमें रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का पूर्ण त्याग किया जाता है तथा स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया जाता है। इस पद्धति में फसल विविधीकरण, मिश्रित खेती और जैव विविधता को बढ़ावा दिया जाता है। साथ ही, मिट्टी को एक जीवित इकाई मानकर उसकी जैविक गतिविधियों को संरक्षित और प्रोत्साहित किया जाता है।

## प्राकृतिक खेती के लाभ

प्राकृतिक खेती के अनेक लाभ हैं, जो आर्थिक, पर्यावरणीय, स्वास्थ्य और सामाजिक स्तर पर देखे जा सकते हैं। आर्थिक दृष्टि से यह खेती की लागत को कम करती है क्योंकि इसमें बाहरी इनपुट्स की आवश्यकता कम होती है। पर्यावरणीय दृष्टि से यह मिट्टी, जल और वायु को प्रदूषण से बचाती है तथा पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखती है। स्वास्थ्य के लिए यह रसायन मुक्त और सुरक्षित खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराती है। सामाजिक रूप से यह किसानों को आत्मनिर्भर बनाती है और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ाती है।

## प्राकृतिक खेती की चुनौतियाँ

हालांकि प्राकृतिक खेती के अनेक लाभ हैं, फिर भी इसके सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं। प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन में कमी देखी जा सकती है, जिससे किसानों में असमंजस की स्थिति उत्पन्न होती है। इसके अलावा, किसानों में जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी भी एक बड़ी समस्या है। प्राकृतिक उत्पादों के लिए उचित बाजार और मूल्य न मिलना भी एक प्रमुख बाधा है। साथ ही, इस पद्धति से संबंधित वैज्ञानिक प्रमाण और शोध अभी सीमित हैं, जिससे इसके व्यापक प्रसार में कठिनाई होती है।

## भारत में प्राकृतिक खेती की स्थिति

भारत में प्राकृतिक खेती का विस्तार धीरे है रहा बढ़ धीरे- और योजनाओं विभिन्न है। रही कर प्रोत्साहित इसे भी सरकार और प्रशिक्षण को किसानों से माध्यम के कार्यक्रमों, तकनीकी सहायता और आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। कई राज्यों में प्राकृतिक खेती को अपनाने वाले किसानों की संख्या लगातार बढ़ रही है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भविष्य में यह पद्धति अधिक लोकप्रिय हो सकती है। यह खेती प्रणाली देश की टिकाऊ कृषि नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनती जा रही है।

## प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के उपाय

प्राकृतिक खेती को व्यापक स्तर पर अपनाने के लिए विभिन्न उपाय आवश्यक हैं। किसानों को प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से इस पद्धति की जानकारी दी जानी चाहिए। प्राकृतिक उत्पादों के लिए अलग और सशक्त बाजार व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए ताकि किसानों को उचित मूल्य मिल सके। इसके अलावा, सरकार द्वारा अनुदान, तकनीकी सहायता और नीति समर्थन प्रदान किया जाना चाहिए। अनुसंधान और विस्तार सेवाओं को भी मजबूत बनाना आवश्यक है ताकि इस पद्धति को वैज्ञानिक आधार मिल सके।

## निष्कर्ष

प्राकृतिक खेती एक टिकाऊ, पर्यावरण भविष्य और अनुकूल- कम को लागत की किसानों केवल न यह है। प्रणाली कृषि उन्मुख है करती, बल्कि उनकी आय बढ़ाने में भी सहायक होती है। साथ ही, यह पर्यावरण संरक्षण और मानव स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत लाभकारी है। यदि इसे उचित समर्थन और प्रोत्साहन मिले, तो यह आने वाले समय में कृषि क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है।

●●●